भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-३९, सितम्बर-२०२४

राष्ट्र का सजग प्रहरी शिक्षक

www.bhartiyaparampara.com

For Private Circulation Only

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-४, अंक-३९, सितम्बर-२०२४

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८१, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-शरद

सोम	30 अश्विन कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्रि	02 भाद्रपद कृ. अमावस्या, पोळा पर्व, मारबत पर्व	09 भाद्रपद शु. षष्ठी, स्कंद षष्ठी	16 अश्विन कृ. त्रयोदशी, विश्वकर्मा पूजा	23 अश्विन कृ. षष्ठी
मंगल		03 भाद्रपद कृ. अमावस्या	10 भाद्रपद शु. सप्तमी, संतान सप्तमी व्रत	17 भाद्रपद शु. चतुर्दशी/पूर्णिमा, अनन्त चतुर्दशी, श्राद्ध प्रारंभ	24 अश्विन कृ. सप्तमी
बुध		04 भाद्रपद शु. प्रतिपदा	11 भाद्रपद शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी	18 अश्विन कृ. प्रतिपदा	25 अश्विन कृ. अष्टमी
गुरू		05 भाद्रपद शु. द्वितीया, शिक्षक दिवस	12 भाद्रपद शु. नवमी	19 अश्विन कृ. द्वितीया	26 अश्विन कृ. नवमी
शुक्र		06 भाद्रपद शु. तृतीया, हरतालिका तीज, ओणम प्रारंभ	13 भाद्रपद शु. दशमी, तेजा दशमी	20 अश्विन कृ. तृतीया	27 अश्विन कृ. दशमी
शनि		07 भाद्रपद शु. चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, डांडिया चौथ	14 भाद्रपद शु. एकादशी, हिंदी दिवस, परिवर्तिनी एकादशी व्रत	21 अश्विन कृ. चतुर्थी	28 अश्विन कृ. एकादशी, इन्दिरा एकादशी व्रत
रवि	01 भाद्रपद कृ. चतुर्दशी, पर्युषण पर्व प्रारंभ	08 भाद्रपद शु. पंचमी, ऋषि पंचमी, सम्वत्सरी पर्व	15 भाद्रपद शु. द्वादशी, प्रदोष व्रत, ओणम, वामन जयंती	22 अश्विन कृ. पंचमी	29 अश्विन कृ. द्वादशी, प्रदोष व्रत

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

पर्युषण पर्व जैन धर्म का एक प्रमुख धार्मिक उत्सव है, जो आत्मा की शुद्धि, करुणा की संवेदनशीलता और अहिंसा के सिद्धांतों को मनाने के लिए समर्पित होता है। इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक अनुशासन, तपस्या और आत्मा की पवित्रता को प्रोत्साहित करना है। इस अवसर पर, जैन समुदाय के लोग उपवासन, ध्यान और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करते हैं।

WWW पूरा पढ़े

पोळा पर्व महाराष्ट्र का एक प्रमुख त्योहार है, जो किसानों के लिए विशेष महत्व रखता है। यह त्योहार श्रावण माह की अमावस्या को मनाया जाता है और मुख्य रूप से बैल, गाय, और अन्य कृषि उपकरणों की पूजा के रूप में जाना जाता है। इस दिन, किसान अपने बैलों को स्नान कराकर उन्हें सजाते हैं, और उनकी पूजा करके उनके स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करते हैं।

WWW पूरा पढ़े

मारबत मारबत – नागपुर शहर में पोळा के दिन दो **मारबत** निकलती है। 'मारबत' एक देवी का रूप है जो बुरी ताकतों और बीमारियों से स्थानीय लोगों का बचाव करती है। **काली मारबत भीषण व भयानक होती है और पीली मारबत देवी का स्वरूप होती है।**

WWW पूरा पढ़े

राष्ट्र का सजग प्रहरी और मार्गदृष्टा है, शिक्षक

शिक्षक, राष्ट्र का सजग प्रहरी, मार्गदृष्टा और भविष्य निर्माता भी है। **शिक्षक माटी को मनचाहा आकार देकर सुंदर घड़ों का निर्माण करते हैं, यानि देश का भविष्य गढ़ते हैं।** शिक्षक उस मोमबत्ती के समान है जो ख़ुद जलकर के दूसरों को प्रकाश देती है। शिक्षक हमें अंधेरे से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है। राष्ट्र का सजग प्रहरी और मार्गदृष्टा भी है, शिक्षक ।

दुनिया का कितना ही सामर्थ्यवान व्यक्ति क्यों न हो वह गुरु की शिक्षा का ऋणी है। बच्चे की पहली पाठशाला माँ होती है किंतु शिक्षक तो बच्चे के सम्पूर्ण जीवन की पाठशाला है। शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली है। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींचकर महाप्राण शक्तियों का निर्माण करते हैं। फूल में यदि खुशबू होगी तो वह सहज ही वातावरण को सुगंधित करेंगी। **बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने के लिए माता को भक्त, पिता को योगी और आचार्य को ज्ञानी होना चाहिए।**

गुरुर्ब्रह्मा,गुरुर्विष्णु,गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परंब्रम्ह तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

शिक्षक शब्द को परिभाषित नहीं किया जा सकता और न ही शब्दों के तरकश में रखा जा सकता है।

शिक्षक शब्द में सम्पूर्ण ब्रह्मांड समाया है। इसकी व्याख्या करना यानी सूरज को दीपक बताने के समान है। शिक्षक वह जो शिष्ट हो, मिष्ट हो और अभिष्ट हो। क्षमाशील हो और कर्मशील भी हो। शिक्षक वो ही है जो विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य का मार्ग नहीं छोड़ता है। उसे नेकदिल, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, लगनशील, गंभीर चिंतक, सुयोग्य, सामर्थ्यवान, निपुण, कुशल, स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट, ज्ञान का धनी, समृद्धशाली, क्रांतिकारी, दृढसंकल्पित, धुन का पक्का, जिम्मेदार और धैर्यवान होना चाहिए। उसका व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली होना चाहिए।

शिखर तक पहुँचाने वाला और शिष्य की कमजोरियों को दूर करने वाला ही सच्चा

शिक्षक है। शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण कर संस्कारिक बनाना है। शिक्षक हमें सिखाते हैं कि, अपनी धरती अपना आकाश पैदा कर, हर सांस में नया विश्वास पैदा कर, मांगने से कब मिलती है मदद, अपनी मेहनत से नया इतिहास पैदा कर ।

कृष्ण सा आदर्श गुरु और एकलव्य सा शिष्य न हुआ है और न होगा। लेकिन आज के बदलते परिवेश में गुरु-शिष्य के पाकीज़गी भरे रिश्तों में कड़ुवाहट घुल गई है। मर्यादा और नैतिकता का पालन ही शिक्षा की मजबूत आधारशिला है। जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करें, जो हमें धन का गुलाम बनाएं, जो हमें भोग विलास में डुबोएं, जो हमें दूसरों के विनाश का पाठ पढ़ाएं, वह शिक्षा, शिक्षा नहीं, भ्रष्टता है। ग्लोबलाइजेशन के इस युग में आज बच्चों को नैतिक और रोजगार मूलक शिक्षा की अधिक आवश्यकता है। शिक्षा को बोझ मुक्त कर कर्मयुक्त बनाना ज्यादा श्रेयष्कर है।

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविंद दियो बताय ।।

भगवान तो केवल रास्ता बताता है किंतु गुरु सम्पूर्ण जीवन संवारता है। गुरु भगवान से भी बढ़कर है। जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाए है और तीनों लोकों का तेजस्व जिनके चेहरे को दैदीप्यमान करता है, वो शिक्षक है। शिक्षक वह जौहरी है जो पत्थरों को तराश कर बहुमूल्य कोहिनूर हीरे का निर्माण-सृजन करता है। **शिक्षक एक योद्धा है, क्रांतिकारी है, रचनाधर्मी है, सृजन कर्मी है, एक संत भी है, एक कुशल और चतुर राजनीतिज्ञ भी है, एक समाज सेवक भी है और एक राष्ट्रभक्त भी है सच्चा शिक्षक।**

समर में घाव खाता है उसी का मान होता है।
छिपा उस वेदना में अमर बलिदान होता है ।।
सृजन में चोट खाता है छैनी और हथौड़ी से ।।।
वहीं पाषाण मंदिर में कहीं भगवान होता है ।।।।

- नलिन खोईवाल जी, इंदौर (मध्य प्रदेश)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

एक 50 वर्षीय प्रतिष्ठित शिक्षक अपने 85 उम्र पा चुके पूर्व शिक्षक के बारे में ज्ञात होते ही, बिना विलंब किए, उनसे पाँव-धोक करने के साथ-साथ कृतज्ञता ज्ञापित करने पहुँचे। लेकिन उसको वो शिक्षक महोदय पहचान ही नहीं पाये। फिर भी उसे प्यार से बैठाया और पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा... **"याददाश्त कमजोर हो रही है और ऊपर से स्पष्ट दिखता भी नहीं.. खैर.. बताओ क्या नाम है, क्या करते हो, कैसे आना हुआ ?"**

उसने अपना नाम बताते हुए कहा- "सर, जिस दिन आपने मेरी लाज बचायी थी, उसी दिन मैंने आप जैसा शिक्षक बनने का निर्णय कर लिया था और सर, अब मैं भी आपकी ही तरह शिक्षक बन गया हूँ।"

"ओह! अच्छा..'वाह' यह तो अच्छी बात है। लेकिन मैंने तुम्हारी लाज बचायी.. वह घटना स्मृति में नहीं आ रही।"

फिर उनको याद दिलाते हुए उसने बताया...

"सर, जब मैं ग्यारहवीं कक्षा में था तब हमारी कक्षा में एक घटना घटी थी.. उसमें आपने मुझे बचाया था।"

"कौन सी घटना, थोड़ा विस्तार से बताओ शायद याद आ जाय।"

"ठीक है सर, मैं आपको याद दिलाता हूँ.. आपको मैं भी याद आ जाऊँगा।"

"सर, उस समय हमारी कक्षा में एक बहुत अमीर लड़का पढ़ता था.. जिसकी एक दिन वो महँगी घड़ी जो वह पहनकर आता था.. चोरी हो गयी.. **कुछ याद आया सर ?"**

"ग्यारहवीं कक्षा ???"

"हाँ सर.. उस दिन नाश्ते वाले समय के पहले मैंने देखा वह अपनी घड़ी पेंसिल वाले डिब्बे में रख रहा है तब मैंने मौका देख वह घड़ी चुरा ली थी।"

उसके बाद जब आप कक्षा लेने आये.. तब उसने आपसे शिकायत की.. तब आपने कहा कि **"जिसने भी वह घड़ी चुराई है उसे वापस कर दो.. मैं उसे सजा नहीं दूँगा.. लेकिन डर के मारे मेरी हिम्मत ही न हुई।"**

फिर आपने कक्षा का दरवाजा बन्द कर हम सबके साथ-साथ उस छात्र को भी आँखें मूँद कतार बना खड़े होने को कहा और यह भी कहा कि आप सबकी जेब देखेंगे। **"लेकिन जब तक घड़ी नहीं मिल जाती तब तक कोई भी अपनी आँखें नही खोलेगा वरना उसे स्कूल से निकाल दिया जायेगा।"**

आप मेरे पास आये तो मेरी धड़कन तेज होने लगी.. लेकिन मेरे जेब में घड़ी मिलने के बाद भी हम सब आँखें बन्द कर खड़े हो गए.. आप एक-एक कर सबकी जेब देख रहे थे.. जब कतार में खड़े सभी की जेब को टटोला.. और जब सब की जेबें टटोल लीं.. फिर घड़ी उस लड़के को वापस देते हुए कहा, **"अब ऐसी घड़ी पहनकर स्कूल नहीं आना और जिसने भी यह चोरी की थी वह दोबारा ऐसा काम न करे"..** इतना कहकर आप फिर हमेशा की तरह पढाने लग गये थे.."कहते कहते उसकी आँख भर आई"

उसने भावुक हो रुंधे गले से कृतज्ञता जताते हुए कहा - **"आपने मुझे सबके सामने शर्मिंदा होने से बचा ही नहीं लिया बल्कि अन्त तक मेरा चोर होना जाहिर न होने दिया।"** आपके इसी कृत्य ने मुझे आप जैसा शिक्षक बनने के लिये प्रेरित किया।

इतना सब सुनने के बाद उस वृद्ध शिक्षक ने कहा -"हाँ हाँ...मुझे याद आया।" उनकी आँखों में चमक आ गयी। उन्होंने आगे बताया "बेटा... "मैं आजतक नहीं जानता था कि वह चोरी किसने की थी क्योंकि... **जब मैं तुम सबकी जेब देख रहा था तब मैंने भी अपनी आँखें बन्द कर ली थीं क्योंकि मैं जानना भी नहीं चाहता था कि चोरी किसने की।"**

यह जानकर वह अचंभित हो.. **गुरुजी की चरण वंदना करते हुए कहा - "पहले तो केवल यही समझ पाया था कि किसी के दोष को जग जाहिर नहीं करना चाहिए" लेकिन आज यह भी सीखने को मिला कि "किसी के दोष को जानने का प्रयास भी नहीं करना चाहिए।"**

अतः "गुरुजी आज फिर आपसे जिन्दगी का एक और पाठ सीख कर जा रहा हूँ...।"

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए
सोनल जी ओमर का धन्यवाद

It's Time To
Find Your
Luxury Home
WHITE BERRY
RESIDENCY
BOOK NOW
98705 80810
85913 69996
LUXURY LIVING
WITH MODERN AMENITIES
ASHA NAGAR, THAKUR COMPLEX, KANDIVALI (EAST), MUMBAI.

Shree Ganeshay Namah
Kings weds Queens
PAPER LESS
&
SHIPPING
FREE
WEDDING
INVITATION
CALL US
www.kingswedsqueens.com

हरतालिका तीज वास्तव में **'सत्यम शिवम सुंदरम'** के प्रति आस्था और प्रेम का व्यवहार है। वास्तव में हरतालिका तीज सुहागन का त्यौहार है। भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म में महिलाओं के जो विशेष व्रत होते हैं, उसमें हरतालिका तीज का विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान है। **अन्य व्रत की अपेक्षा इस व्रत के नियम कुछ कठोर हैं, यही कारण है कि यह व्रत संपूर्ण भारत में नहीं रखा जाता।** यह व्रत विशेषकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश बिहार, झारखंड एवं राजस्थान के कई इलाकों में मनाया जाता है। यह देखते हुए कह सकते हैं यह व्रत विशेष कर हिंदी भाषी प्रदेशों में प्रमुखता से मनाया जाता है।

हरितालिका व्रत **"हस्त गौरी व्रत"** के नाम से भी जाना जाता है। यह **भादो मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया हस्त नक्षत्र में होता है** तथा हरियाली तीज के बाद आता है। माँ पार्वती का सौभाग्यदायक व्रत हरतालिका विवाहित महिलाएँ और कुँवारी कन्याएँ श्रद्धा के साथ रखती हैं। भगवान शिव और पार्वती की पूजा अखंड सुहाग के लिए, पति सुख प्राप्त करने के लिए करती हैं। कुँवारी कन्याएँ पूजा कर अच्छा वर प्राप्त हेतु कामना करती हैं। चूँकि सुहागन स्त्रियाँ अखंड सुहाग के लिए व्रत करती हैं इसलिए इसे **"अखंड सौभाग्यवती व्रत"** भी कहा जाता है।

हरतालिका नाम क्यों?

भादो मास में प्रकृति अपने पूरे यौवन पर होती है। सभी ओर हरियाली छायी होती है। प्रकृति का सौंदर्य मनमोहक होता है। नव शाखा, नव किशलय, नव पल्लव एक दूसरे को स्पर्श कर प्यार का इजहार करते हैं, और मानव जीवन को भी मधुर एहसास होता हैं। कहा जाता है माता पार्वती महादेव को अपना पति बनाना चाहती थी, इसके लिए उन्होंने कठिन तपस्या की। **इसी तपस्या के दौरान पार्वती जी की सहेलियाँ पार्वती को हरण अर्थात अगवा कर ले गयी, इस कारण इस व्रत का नाम हरतालिका पड़ा।**

"हरत शब्द हरण से बना है जिसका अर्थ अपहरण करना तथा आलिका का अर्थ होता है सखी"। सखियों ने इसलिए अपहरण किया कि पार्वती जी की शादी विष्णु भगवान से ना हो जाए जबकि पार्वती शंकर जी से विवाह करना चाहती थी।

व्रत के नियम एवं विधि -

यह व्रत तीन दिन का होता है। **प्रथम दिन** दूज होती है। व्रती नदी या तालाब में स्नान कर सुंदर वस्त्र धारण करती है (कहीं-कहीं यह वस्त्र व्रत करने वाली स्त्री के मायके से आते हैं)। विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाकर ग्रहण करती हैं; हाथों में मेहंदी, पैर में महावर, नई चूड़ियां, नई बिछुड़ी धारण करती हैं। सिर से लेकर नख तक सोलह श्रृंगार करती हैं। रात में नारियल तथा पेड़ा खाकर सोती हैं।

दूसरे दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान कर पूजन की तैयारी करती है। प्रातःकाल की गई पूजा श्रेष्ठ मानी जाती है। किसी-किसी स्थान पर फुलारा सजाते हैं, तथा सामूहिक रूप से बैठकर पूजा करते हैं। इस दिन जल तक ग्रहण नहीं करते, निर्जल व्रत होता है। पूजा करने से पहले सुहागन स्त्री पूरा श्रृंगार करके पूजा करती है। जो फुलौरा सजाते हैं वह सात बार साथ में पूजा करती हैं, तथा रात जागरण कर भगवान का भजन करती है।

तीसरे दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करने के बाद भगवान शंकर और पार्वती की पूजा कर सुहाग लेती है। उसके उपरांत पूजन की सामग्री तथा शंकर एवं पार्वती की पार्थिव प्रतिमा किसी नदी या तालाब में एक साथ ले जाकर जल में प्रवाहित कर देती हैं। भगवान शंकर एवं पार्वती पर चढ़ाए गए वस्त्र ब्राह्मण को दान दिया जाता हैं। उसके उपरांत ही वह जल पीकर अपना व्रत तोड़ती है।

पूजन की तैयारी -

हरतालिका पूजन के लिए भगवान शिव एवं पार्वती जी की काली मिट्टी एवं बालू रेत मिलाकर प्रतिमा या शिव लिंग हाथों से बनाई जाती है। पूजा स्थल स्वच्छ एवं पवित्र करने के लिए हल्दी या गोबर डालकर लीप कर आटे का स्वास्तिक बनाकर उसके ऊपर चौकी या पाटा रखें। फिर उसपर लाल वस्त्र बिछाकर मिट्टी से बनी शंकर पार्वती जी की प्रतिमा अथवा शिवलिंग रख दे। केले के पत्ते ऊपर लगा दे। थाली में रोली चावल, घी का दीपक, जनेऊ, दूब, फल, नींबू, ककड़ी, नारियल रखें। एक सुहाग की पिटारी जिसमें साड़ी-ब्लाउज, सुहाग की पूरी सामग्री, 16 मिठाई या फल तथा रुपए एवं शिवजी के लिए धोती/अंगोछा रखें। सभी तैयारी करने के बाद देवताओं का आह्वान करते हुए शिवजी पार्वती और भगवान गणेश का पूजन करें। सुहाग सामग्री पार्वती जी को चढ़ाएं तथा शंकर जी को जनेऊ, श्वेत वस्त्र एवं ककड़ी-नींबू अवश्य चढ़ाएं। नारियल लेकर पार्वती जी को अर्घ दें। पति की दीर्घ आयु की कामना करें तथा दंडवत करके स्थान छोड़ें। पूजन करने के बाद कथा सुनना आवश्यक है। रात्रि में जागरण करना चाहिए। **हरतालिका का पूजन प्रदोष काल (प्रदोष काल वह है जब**

सूर्य अस्त के बाद दिन और रात मिलते हैं) में करें। तीन प्रदोष काल होते हैं।

हरतालिका व्रत की कथा -

माँ पार्वती ने अपने पूर्व जन्म में भगवान शंकर को पति के रूप में प्राप्त करने हेतु कठोर तप किया था। बाल्य काल में अधोमुखी होकर तप किया। तप के समय अन्न का सेवन नहीं किया। कभी सूखे पत्ते कभी सिर्फ हवा का सेवन, कभी कंदमूल का फलाहार किया। सर्दी के रूप में ठंडे जल में खड़े होकर तप किया। यह देखकर उनके पिता बहुत दुखी हुए। इसी समय नारद जी भगवान विष्णु से शादी का प्रस्ताव लाए तथा पार्वती जी के पिता ने स्वीकार कर लिया। माँ पार्वती को जब यह बात मालूम पड़ी तो वह विलाप करने लगी। वह शंकर जी से विवाह करना चाहती थी। माँ पार्वती अपनी सहेलियों के साथ सलाह मशवरा कर के उनके साथ घने वन में चली गई तथा गुफा में जाकर भगवान शिव की आराधना करने लगी। भाद्र पक्ष तृतीया शुक्ल पक्ष के हस्त नक्षत्र को माता पार्वती ने प्रेम से शिव लिंग का निर्माण किया तथा उसकी पूजा कर रात जागरण किया भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिए और इच्छा अनुसार पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

व्रत के नियम -

यह व्रत निर्जला किया जाता है। दूसरे दिन सूर्य उदय के बाद ही जल ग्रहण किया जाता है। अच्छा वर प्राप्त करने के लिए इस व्रत को कुँवारी कन्या भी रख सकती है। यह व्रत प्रारंभ करने के बाद छोड़ा नहीं जाता। इस व्रत को करने वाली स्त्रियाँ रात्रि में सोती नहीं है अपितु जागरण करती हैं। गर्भावस्था में व्रत करने वाली स्त्री का फलाहार करने से दोष नहीं लगता। यदि स्वास्थ्य खराब रहता हो तो उद्यापन करने के बाद व्रत छोड़ा जा सकता है। हरतालिका तीज व्रत का उद्यापन हरतालिका व्रत के दिन ही करते हैं।

उद्यापन -

उद्यापन 13 वर्ष व्रत करने के पश्चात ही होता है इस व्रत में पति-पत्नी गठबंधन करके उद्यापन करते हैं। पति को भी उसे दिन व्रत रखना होता है उद्यापन में 17 सुहाग की पिटारी होती हैं। बिस्तर, पांच बर्तन, पंडित जी के पांच वस्त्र, मिठाई एवं रुपए आदि होते हैं। उद्यापन करने के बाद व्रत तो रखा जाता है लेकिन फलाहार किया जाता है। **महाभारत काल में भगवान कृष्ण ने माता कुंती को हरतालिका व्रत का विधि-विधान बताया था।** महिलाओं के जितने व्रत हैं उसमें सबसे कठिन व्रत हरतालिका तीज है। कुछ स्थानों पर अब सास अपना व्रत बहु को दे देती है लेकिन प्रक्रिया तोड़ी नहीं जाती।

- अधिवक्ता उषा चतुर्वेदी जी, इंदौर (म. प्र.)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

पौराणिक काल में एक बार **महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना के लिए गणेशजी का आह्वनान किया और उनसे महाभारत को लिपिबद्ध करने की प्रार्थना की।** गणेश जी ने कहा कि मैं जब लिखना प्रारंभ करूंगा तो कलम को रोकूंगा नहीं, यदि कलम रुक गई तो लिखना बंद कर दूंगा। तब व्यास जी ने कहा प्रभु आप विद्वानों में अग्रणी हैं और मैं एक साधारण ऋषि किसी श्लोक में त्रुटि हो सकती है, अतः आप समझकर और त्रुटि हो तो निवारण करके ही श्लोक को लिपिबद्ध करना। आज के दिन से ही व्यास जी ने श्लोक बोलना और गणेशजी ने महाभारत को लिपिबद्ध करना प्रारंभ किया। उसके 10 दिन के पश्चात अनंत चतुर्दशी को लेखन कार्य समाप्त हुआ। इन 10 दिनों में गणेशजी एक ही आसन पर बैठकर महाभारत को लिपिबद्ध करते रहे, इस कारण 10 दिनों में उनका शरीर जड़वत हो गया और शरीर पर धूल, मिट्टी की परत जमा हो गई। तब 10 दिन बाद गणेशजी ने सरस्वती नदी में स्नान कर अपने शरीर पर जमीं धूल और मिट्टी को साफ किया। जिस दिन गणेशजी ने लिखना आरंभ किया उस दिन भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि थी। इसी उपलक्ष्य में हर साल इसी तिथि को गणेशजी को स्थापित किया जाता है और दस दिन मन, वचन, कर्म और भक्ति भाव से उनकी उपासना करके अनन्त चतुर्दशी पर विसर्जित कर दिया जाता है। **गणेश उत्सव का आरंभ छत्रपति शिवाजी जी महाराज ने किया था**, लेकिन इसे **हर घर, जनमानस तक पहुँचाने का कार्य लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने किया। 1893 में लोकमान्य ने मुंबई के गिरगांव में गणपति का पहला मंडल बनाया, जिसका नाम केसवी नाइक चॉल गणेश उत्सव मंडल था।** लोकमान्य तिलक ने ही पहली बार मिट्टी की बनी हुई गणेश प्रतिमा को 10 दिनों के सार्वजनिक पूजन के लिए स्थापित किया। आज लगभग हर राज्य, हर शहर, हर गली-मोहल्ले, हर घर में गणपति विराजे जाते है, गणपति महोत्सव की धूम रहती है। इसका **आध्यात्मिक महत्व** है कि हम दस दिन संयम से जीवन व्यतीत करें और दस दिन पश्चात अपने मन और आत्मा पर जमी हुई वासनाओं की धूल और मिट्टी को प्रतिमा के साथ ही विसर्जित कर एक परिष्कृत और निर्मल मन और आत्मा के रूप को प्राप्त करें।

- सोनल ओमर जी, राजकोट (गुजरात)

प्रथम पूज्य गणेश का, व्यक्तित्व है निराला।
गणपति स्वयं है ज्ञान की, पूर्ण पाठशाला।।

सोच को रखो बड़ी, उनका बड़ा मस्तक सिखाए।
सूप से लम्बे कान समझाते,
व्यर्थ वार्ता भीतर ना समाए।।

एकदंत की सीख ये, वस्तु का सही सदुपयोग हो।
छोटी-छोटी आँखें बतलाती,
सूक्ष्मता से जाँचकर ही निर्णय लो।।

बड़ा उदर हमें बताए, भोजन के साथ बातों को भी पचाना।
हिलती-डूलती सूंड सिखाती,
अपना जीवन सदैव सक्रिय बिताना।।

चार भुजाएं दिखाती, कर्म और सहायक स्वभाव को।
मूषक सवारी सिखाती
दुर्बल देह में इच्छाशक्ति के भाव को।।

हाथ की कुल्हाड़ी संकेत दे,, मोह के बन्धनों को काटना।
दूजे हाथ की रस्सी कहे,
अपने लक्ष्य को नजदीक राखना।।

आशीर्वाद का हाथ कहे, दया, धर्म और कल्याण करो।
हाथ में रखे मोदक जैसे
जीवन में श्रद्धा और विश्वास भरो।।

- सोनल मंजू श्री ओमर जी, राजकोट (गुजरात)

गणेशोत्सव क्यों मनाते है ?

गणेशोत्सव गणेश जी की पूजा और उनके आगमन की खुशी में मनाया जाता है। यह त्योहार समृद्धि, समरसता और नए आरंभ की कामना के साथ जुड़ा हुआ है।

गणेश जी को "गणपति बाप्पा मोरया" क्यों कहते है ?

गणेश जी को "गणपति बाप्पा मोरया" इसलिए कहा जाता है क्योंकि "गणपति" का अर्थ होता है 'गणों का प्रमुख' और "बाप्पा" एक स्नेहपूर्ण संबोधन है, जो उनकी महिमा और प्रियता को दर्शाता है।

महाराष्ट्र की महालक्ष्मी

कहते है महालक्ष्मी ने महिलाओं के सुहाग की रक्षा करने के लिए असुरों का नाश किया था। इसलिए उनको **'सुहागिन के सौभाग्य' (सावन यांच्या सौभाग्याची) की गौरी** भी कहा जाता हैं।

विस्तृत में पढें

ऋषि पंचमी । माहेश्वरी रक्षाबंधन

ऋषि पंचमी भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। सप्त ऋषियों का आशीर्वाद प्राप्त करने और सुख, शांति, मंगल और समृद्धि की कामना से यह व्रत रखा जाता हैं।

विस्तृत में पढें

राधा अष्टमी । राधा जन्मोत्सव

राधाष्टमी यानी देवी राधा का जन्मदिन यह हर साल भाद्र पद शुक्ल अष्टमी तिथि को मनाया जाता है, जो भक्ति और प्रेम की प्रतीक हैं।

विस्तृत में पढें

तेजा दशमी पर्व

वीर तेजा जी के मंदिरो में मेले का आयोजन होता है। बाबा की सवारी (वारा) जिसे आती है, उसके द्वारा रोगी, दुःखी, पीड़ितों का धागा खोला जाता है, महिलाओं की गोद भरी जाती है।

विस्तृत में पढें

खोवे (मावा) के मोदक

सामग्री - खोवा: 250 ग्राम, शक्कर: 50 ग्राम, बादाम की कतरन: 1/4 कप

विधि - मावे को अच्छी तरह से मसल कर उसमें पीसी हुई शक्कर अच्छे से मिला लें। बादाम की कतरन डालें और गूंथ लें। इस मिश्रण को मोदक के सांचे में दबाकर मोदक बना लें। खोवे में रंग मिलाकर रंग-बिरंगे मोदक भी बनाए जा सकते हैं।

केसरी मोदक

सामग्री - नारियल का बुरादा: 150 ग्राम, शक्कर: 50 ग्राम, इलायची पाउडर: चुटकी भर, मेवा (इच्छानुसार): बारीक कटा, दूध पाउडर: 150 ग्राम, दूध: 1 कप, केसर: चुटकी भर

विधि - दूध पाउडर में नारियल का बुरादा, शक्कर, इलायची पाउडर और मेवा मिला लें। दूध को गरम करके इस मिश्रण को दूध में गूंथ लें। गूंथते समय मिश्रण हल्का हो जाए। थोड़े से दूध में केसर डालकर भिगो लें। केसर के मिश्रण को गूंथे हुए मिश्रण में मिलाएं। इसे सांचे में रखकर अपने पसंदीदा आकार में मोदक बना लें।

तिल-गुड़-खसखस मोदक

सामग्री - मैदा: 100 ग्राम, तेल: 50 ग्राम, गुड़: 50 ग्राम, खसखस: 50 ग्राम, इलायची पाउडर: 1/2 छोटा चम्मच

विधि - तिल और खसखस को सूखा भून लें। फिर इन्हें मिक्सी में दरदरा पीस लें। गुड़ को हाथ से मसलकर बारीक कर लें। गुड़ में खसखस और इलायची पाउडर मिला दें। मैदा को गूंथकर पूरियों के आकार का बेल लें। इसमें तिल, गुड़, खसखस का मिश्रण भरकर मोदक का आकार दें। इन मोदकों को धीमी आंच पर तल लें।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

कई बातें ऐसी हैं जो कही नहीं जाती, कई किस्से ऐसे हैं जो दोहराए नहीं जाते, कई घटनाएं ऐसी हैं जो देखी नहीं जाती और कई चित्र ऐसे हैं जो कभी भुलाए नहीं जाते। आखिर ऐसा क्यों हैं कि आखिर जिन बातों को हम कहना चाहे तो कहने की हिम्मत नहीं हैं या फिर किसी को फुरसत नहीं हैं, आखिर क्या है वो किस्सा जिन्हें भूले से भी दोहराने का या देखने सुनने का मन तो छोड़िए एक सच्चे इंसान का स्वप्न भी नहीं हैं कौन सी हैं वे घटनाएं जो दिल दहला देती हैं और कौन से हैं वे चित्र जो आज भी जेहन में उतरते हैं तो खुद पर इंसान कहने में शर्म आती है और यह बात सच भी है क्योंकि **यह देश आज वह देश नहीं रहा जो "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते" का भाव रखता था, यह मुल्क वह मुल्क नहीं जो बच्चों में भी भगवान का रूप देखता था।** यह दुनिया वो दुनिया नहीं रही जिसकी हम कल्पना कर सकें। याद करो वो दृश्य जब अखबार में एक बच्चे ने मरते समय इस दुनिया के लोगों के लिए कहा था कि **"मैं भगवान से आप सभी की शिकायत करूंगा और कहूंगा भगवान ये लोग बहुत गंदे हैं..."** याद करिए वो दृश्य जब छोटी छोटी आसिफा जैसी न जाने कितनी अनगिनत बच्चियों को भी एक हैवान अपनी हैवानियत का शिकार बनाता है आज बच्ची छोटी हो या बड़ी, अबोध हो या वयस्क, समझदार हो चाहे उम्र के पड़ाव को पार करने वाली एक वृद्धा इस दुनिया में दरिंदों की नजर में वह सिर्फ एक शिकार है जिसे वे अत्याचार करके, बहला फुसलाकर या अन्य षडयंत्रों के माध्यम से अपनी हवस का शिकार बनाने में जरा भी नहीं चूकते।

हमें दामिनी याद है, हमे निर्भया याद है, आसिफा याद है हैदराबाद की डॉक्टर रेड्डी याद है और भी न जाने कितने नाम है हाल ही में कोलकाता की डॉ. मौमिता देबनाथ पर की गई वारदात को सुनकर दिल दहल जाते हैं, मगर हम कुछ दिन ही आंदोलन कर उनके लिए न्याय की मांग कर, उनके लिए प्रदर्शन कर फिर अपनी अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होकर अपनी दुनियादारी में मशगूल हो जाते हैं।

राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट देखें तो यह स्पष्ट होता है कि **भारत में हर 20 मिनट में महिला के साथ बलात्कार होते हैं और बाल शोषण की रिपोर्ट देखें तो हर तीन में से दो**

बच्चो को शोषण का शिकार बनाया जाता है। वृद्धों की स्थिति देखें तो 83 प्रतिशत बुजुर्ग यह मानते हैं कि समाज में दुर्व्यवहार प्रचलित हैं।

आजादी मिले 75 साल से अधिक हो गए सरकारें अमृत महोत्सव का आयोजन कर रहे रहीं हैं मगर आज देश का कोई कोना ऐसा नहीं जहां हम कह सकें कि हमारी नारी शक्ति सुरक्षित है, हमारी बेटियों की अस्मिता सुरक्षित है तो हम कैसे कहें कि हमारी आजादी पूरी है।

आज भी देश का भविष्य देश की सड़कों पर ठोकर खा रहा है, देश का अन्नदाता किसान खुद का वजूद बचाने के लिए दिल्ली की सड़कों पर बैठता है, आवाज उठाता है, कृषि प्रधान यह देश कुर्सी प्रधानता के गुण गाता है। **जैसा कि दुष्यंत कुमार ने कभी कहा था देश की दुर्व्यवस्था पर - "कल नुमाइश में मिला दिया था मुझे चिथड़े पहने हुए, मैंने पूछा नाम तो बोला मैं हिंदुस्तान हैं।"** आज व्यवस्था के नाम पर यह देश बकौल अदम गोंडवी साहब के शब्दों में - "काजू भुने प्लेट में, व्हिस्की गिलास में, उतरा है रामराज्य विधायक निवास में" जैसा है।

कभी सोचता हूं कि हम जा किधर दिशा में रहे हैं आखिर कौन सी अंधी दौड़ में जी रहे हैं जिनकी चीख पुकार, जिनका दर्द महसूस तो कर ही सकते हैं कुछ बदल सकते हैं।

सोचिए कितने शर्म सोचिए कितनी शर्मिंदगी की बात है **कि हमारी नीच सोच के बारे मे हरिशंकर परसाई जी ने लिखा "बलात्कार को पाशविक क्यों कहते हैं, जबकि जानवर या पशु बलात्कार नहीं करते यहां तक सुअर भी नहीं करते बल्कि मनुष्य करते हैं।"**

ये शब्द व्यंग्य नहीं बल्कि तमाचा है जाहिलो की सोच पर अगर इन सब चीजों को देखकर भी अगर समाज न बदले, लोग न समझे तो फिर एक बात सोचना जरूर वह ये कि..... ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है?

- डॉ. किशोर कुमार जी, धौलपुर (राजस्थान)

पर्वत के मिस बदली समझी
शुष्क धरा की पीर।
बदली बरसी तब पर्वत
पर लेकर मीठा नीर॥

दुख ने कितना बदल दिया है
अंगारों सी आह।
वे ही आहें बन जाती हैं
अंतर्मन का दाह।

आह दाह है दाह श्राप है
वे मारक से तीर।
पर्वत के मिस बदली समझी
घायल प्राण-शरीर॥

नेह-समर्पण संध्या - वन्दन
हैं पूजन का थाल।
अंतर्मन का आत्मनिवेदन
है जीवन का ताल।

बदली बरसी बनी ताल
वह यह उसकी तकदीर।
पर्वत के मिस बदली समझी
दुख की दुष्ट लकीर॥

ताल बना तो जल-दर्पण
पे उतरे सुंदर हंस।
हंस उतरते कलरव करते
विकसे कोमल कंज।

अंकुर निकले धरा हरी थी
यों बदली तस्वीर।
पर्वत के मिस बदली समझी
जग में मस्त फकीर॥

- **त्रिलोकी मोहन पुरोहित जी, कांकरोली, राजसमन्द (राज.)**

हम आ गए
सूखे के शहरों से चलकर
हम आ गए - पानी के गांवों में।

सूरज के घाम ने सारे दिन -
हमें ख़ूब तपाया।
प्यास हमारे कंठ पर रख -
पानी ने रुलाया।

रेतीले शहरों से चलकर
हम आ गए - नदियों के गांवों में।

लावा उगलती सड़कों पर -
ख़ूब चले नंगे पैर।
किरच - मरीचिकाओं की -
कर ली ख़ूब सैर।

शूलों के शहरों से चलकर
हम आ गए - फूलों के गांवों में।

अपनों की पीड़ा ने जगाया -
सोए न एक पल।
सपने हुए नहीं कभी अपने -
किया नींद - सा छल।

रतजगों के शहरों से चलकर
हम आ गए - नींदों के गांवों में।

फिरें प्यार को मारे - मारे -
बन प्यार के बंजारे।
मंझधार में रहे सदा हम -
मिले नहीं किनारे।

लहरों के सागर से चलकर
हम आ गए - मांझी के गांवों में।

- **अशोक आनन जी, मक्सी, जिला - शाजापुर (म.प्र.)**

349. महाप्रस्थान से पहले पांडवों ने किसका राज्याभिषेक किया?

- युधिष्ठिर ने राज सिंहासन पर परीक्षित का अभिषेक कर युयुत्सु को राज्य की देखभाल का जिम्मा सौंपा और कृपाचार्य को गुरुवर के पद पर आसीन किया।

350. परीक्षित कौन था?

- अभिमन्यु-उत्तरा का पुत्र और सुभद्रा का पौत्र, जो अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से गर्भावस्था में मृत हो गया था। मृत अवस्था में ही जन्म लेने के बाद उसे, अपनी प्रतिज्ञा अनुसार श्रीकृष्ण ने पुनर्जीवित किया। श्रीकृष्ण ने ही उस बालक को परीक्षित नाम दिया।

351. महाप्रस्थान में कौन-कौन शामिल था?

- पाँचों पाण्डव व द्रौपदी। नगर के बाहर पहुँचने पर एक कुत्ता भी उनके साथ शामिल हो गया।

352. महाप्रस्थान के दौरान रास्ते में सबसे पहले कौन मिला?

- अग्नि देव। उन्होंने अर्जुन से गाण्डीव धनुष व अक्षय तूणीरों का त्याग करने को कहा, जिन्हें अर्जुन लोभवश अब तक धारण किये हुए था।

353. पांडवों के चलने का क्या क्रम था?

- सबसे आगे युधिष्ठिर, उनके पीछे भीमसेन, भीमसेन के पीछे अर्जुन, अर्जुन के पीछे क्रमशः नकुल और सहदेव तथा सबसे पीछे द्रौपदी चल रही थी।

354. महाप्रस्थान के दौरान सबसे पहले कौन गिरा और क्यों?

- स्वर्ग के लिये महाप्रस्थान के दौरान सबसे पहले द्रौपदी लड़खड़ाकर पृथ्वी पर गिर गई। भीमसेन द्वारा यह प्रश्न करने पर कि द्रौपदी ने कोई पाप नहीं किया फिर किस कारण से ऐसा हुआ तो युधिष्ठिर ने कहा कि, "वह पांचों पतियों की पत्नी थी लेकिन इसके मन में अर्जुन के प्रति विशेष झुकाव था, उसके इसी पक्षपात के कारण आज उसे यह फल भोगना पड़ा है।"

355. द्रौपदी के बाद कौन गिरा और क्यों?

- द्रौपदी के बाद सहदेव रास्ते में लड़खड़ा कर गिर पड़ा। भीमसेन के पूछने पर युधिष्ठिर ने बताया कि सहदेव किसी और को अपने जैसा

विद्वान नहीं समझता था, इसी आत्माभिमान रूपी दोष के कारण वह बीच राह में ही गिर गया।

356. सहदेव के बाद कौन गिरा और क्यों?

- द्रौपदी और सहदेव के बाद नकुल भी रास्ते में लड़खड़ा कर गिर गया। भीमसेन के पूछने पर युधिष्ठिर ने बताया कि नकुल को इस बात का घमंड था कि उस जैसा रूपवान दुनिया में और कोई नहीं। इसी गर्व रूपी दोष के कारण उसे बीच राह में ही गिरना पड़ा।

357. नकुल के बाद कौन गिरा और क्यों?

- नकुल के बाद धनुर्धर वीर अर्जुन भी रास्ते में ही लड़खड़ा कर गिर गया। भीमसेन के पूछने पर युधिष्ठिर ने बताया कि अर्जुन को अपनी शूरता का अभिमान था। इसी कारण आज उसे धराशायी होना पड़ा। अत: अपना कल्याण चाहने वाले पुरुष को आत्माभिमान नहीं करना चाहिए।

358. अर्जुन के बाद कौन गिरा और क्यों?

- अर्जुन के बाद महाबली भीमसेन गिर पड़े। गिरने के साथ ही उन्होंने ऐसा होने का कारण पूछा तो युधिष्ठिर ने बताया कि तुम बहुत खाते थे और दूसरों को कुछ भी न समझकर अपने बल की डींगें हांका करते थे; इन्हीं दोषों के कारण आज तुम्हे भूमि पर गिरना पड़ा और तुम सशरीर स्वर्ग न जा सके।

359. अंत में जब देवराज इन्द्र युधिष्ठिर को लेने पहुंचे तो युधिष्ठिर ने क्या कहा?

- मेरे साथ चल रहे इस कुत्ते ने सम्पूर्ण सफर में मेरा साथ दिया है। अत: इसे भी मेरे साथ चलने की आज्ञा दीजिये।

360. देवराज इन्द्र ने युधिष्ठिर के इस आग्रह का क्या प्रत्युत्तर दिया?

- उन्होंने कहा कि "आपको ऐश्वर्यपूर्ण लक्ष्मी, स्वर्ग की सिद्धियाँ व सुख प्राप्त हुए हैं, अत: इस कुत्ते को यहीं छोड़ दीजिये।" साथ ही कहा कि "कुत्तों को रखने वालों का स्वर्ग में कोई स्थान नहीं।"

361. धर्मराज युधिष्ठिर ने पुन: क्या कहा?

- मैं अपने सुख के लिये मेरे शरण में आये इस कुत्ते का त्याग नहीं कर सकता। जो डरा हुआ हो, जो अपनी रक्षा के लिये मेरे शरण में आया हुआ हो और जो मेरा भक्त हो ऐसे प्राणी का मैं त्याग नहीं कर सकता। शरणागत का त्याग सभी अधर्मों से बढ़कर होता है।

362. कुत्ते के रूप में कौन युधिष्ठिर की परीक्षा ले रहे थे?

- धर्मस्वरूप धर्मराज ही कुत्ते का शरीर धारण किये हुए थे।

(क्रमश:.....अगले माह)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

इस दुनिया
की सबसे बड़ी सच्चाई
समझौता है...!

याद रखना दूसरों से
उम्मीद रखोगे तो हार
जाओगे, उम्मीद खुद
से रखोगे
तो जीत जाओगे...!

बांटते चलिए
बटोरते हुए नहीं...!

सत्ता में जब अनपढ़ लोग
बढ़ जाते हैं तो
शिक्षा और परीक्षा बिकने
लगती है...!

बोलना और प्रतिक्रिया
करना आवश्यक है
किंतु संयम और शिष्टता
का दामन नहीं छूटना
चाहिए...!

कांच पर पारा चढ़ाओ तो
आइना बनता है और
किसी को आइना दिखा दो
तो पारा चढ़ जाता है...!

प्रोजेक्ट पूरा कर कॉलेज से निकलने में नेहा को काफी समय हो गया रफ्तार से सीढ़ियां उतरते हुए पैर फिसल गया और वहां नीचे गिर पड़ी। सर से खून बहने लगा पैरो से चलना दूभर हो रहा था इत्तफाक से उसका सीनियर माधव अपने मित्र के साथ वही खड़ा था। इस समय कॉलेज के कैंपस में इक्का-दुक्का छात्र ही नजर आ रहे थे। माधव ने नेहा को सहारा दिया टैक्सी बुलवाई और सीधे अस्पताल ले गया उस समय नेहा होश में नहीं थी। वह रायपुर से कोलकाता पढ़ने आई थी यहां मित्रों के अतिरिक्त उसका अपना कोई भी ना था।

सर पर गहरी चोट होने से डॉक्टर ने टांके लगाए, पैर में प्लास्टर लगा सारी औपचारिकता होने के बाद माधव ने उसके मोबाइल से उसके पापा का नंबर ढूंढ कर उन्हें फोन लगाया और सारी बात बताई। खबर सुनते ही वह घबरा गए ऐसे में एक पिता का हृदय तरह-तरह की आशंकाओं से घिर गया। वह फौरन रायपुर से कोलकाता के लिए फ्लाइट से निकल पड़े। सुबह सुबह जब अस्पताल पहुंचे तो देखा माधव कुर्सी पर बैठ पूरे समय नेहा का ध्यान रख रहा था। कलयुग के इस दौर में ऐसे नौजवान भी है यह देख नेहा के मम्मी पापा अचंभित रह गए।

नेहा के पापा ने हाथ जोड़ते हुए माधव का शुक्रिया अदा किया बेटा तुम्हारे जैसे नौजवानों की ही देश को जरूरत है तभी युवतियां बेफिक्र होकर अपने लक्ष्य को अंजाम दे पाएगी और अपने राष्ट्र को सही मुकाम तक पहुंचाने में कामयाब होगी।

माधव कहने लगा अंकल मेरी प्रारंभिक शिक्षा छोटे से देहात में हुई जहां शिक्षा के साथ ही रोजाना एक बुजुर्ग अध्यापक हमारी एक क्लास लेते थे जिसमें वह हमें मानवता का पाठ सिखाते थे युवा होते होते उनकी सिखाई बातें गहराई से भीतर उतर गई।

पढ़ाई के साथ ही बचपन से ही छात्रों को अपने संस्कार, संस्कृति और व्यवहारिक ज्ञान का पाठ पढाया जाए तो उन्हें जरूर सही दिशा मिलेगी कहते हुए वह निकल पड़ा।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

पिछले दिनों एक मित्र मिले। बुज़ुर्ग हैं। उनकी तीन पुत्रियाँ हैं। तीनों ही ख़ूब पढ़-लिखकर अच्छी नौकरियाँ पा चुकी हैं। तीनों की ही शादियाँ भी हो चुकी हैं। छोटी बेटी की शादी अभी हाल ही में हुई थी।

मित्र ने बतलाया कि उनकी छोटी बेटी बहुत ही ज़हीन है, लेकिन है पूर्णतः शाकाहारी। शादी के बाद जब वह ससुराल गई तो बहुत ख़ुश थी। शादी के एक सप्ताह के बाद जब घर में सामिष भोजन पकने लगा तो उसकी तो हालत ख़राब हो गई।

करे तो क्या करे? सब लोग डिनर पर बैठे। जैसे ही भोजन प्रारंभ हुआ वह भाग कर वाशबेसिन की तरफ गई और उल्टी कर दी। किसी ने इसे ख़ुशख़बरी समझा तो किसी ने कुछ और। कई तरह की प्रतिक्रियाएँ हुईं। पुत्रवधु जब कुल्ला वग़ैरा करके वापस डाइनिंग टेबल पर लौटी तो ससुर ने पूछा, "बेटी तबीयत ठीक तो है?" पुत्रवधु की आँखों में आँसू आ गए और वह डरते-डरते धीमी सी आवाज़ में बोली, "पापा मैं नॉनवैज बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

"तब तो तुम्हारा इस घर में रहना मुश्किल होगा," ससुर ने पुत्रवधु की तरफ ध्यान से देखते हुए कहा।

पुत्रवधु को अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खिसकती हुई सी मालूम हो रही थी। उसकी सिसकियों में तेज़ी आ गई। पूरा माहौल असहज हो गया।

ससुर ने परिवार के सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा, "**देखो भई न चाहते हुए भी मुझे एक कठोर निर्णय लेना होगा और आज ही अभी लेना होगा। देर करने का कोई फ़ायदा नहीं। ये लड़की जितनी जल्दी मुक्त हो जाए उतना अच्छा है।**"

पुत्रवधु अंदर तक काँप उठी। उसने सभी की ओर कातर दृष्टि से देखा।
ससुर ने अत्यंत गंभीर होकर अपना फैसला सुनाते हुए कहा, "मुझे बहुत अफ़सोस है कि हमारे परिवार की खानपान की आदतों की वजह से हमारी पुत्रवधु सामंजस्य नहीं बिठा पाएगी। अतः मैंने यह निर्णय लिया है कि "**आज से इस घर में सामिष भोजन न तो**

पकेगा और न बाहर से ही लाया जाएगा।" मेरा एक सुझाव ये भी है कि "**आज से हमारा पूरा परिवार पूरी तरह से शाकाहारी बनने का प्रयास करे।"**

सभी ने ताली बजाकर उनकी बातों का समर्थन किया। पुत्रवधु की आँखों में पुनः आँसुओं की झड़ी लग गई लेकिन ये आसूँ बेबसी की पीड़ा के न होकर स्नेह और अपनत्व के आनंद के थे।

दूसरे लोग हमारे लिए नहीं, हम दूसरों के लिए क्या त्याग कर सकते हैं यही महत्त्वपूर्ण व उल्लेखनीय है।

- **सीताराम गुप्ता जी, पीतमपुरा (दिल्ली)**

पप्पू- क्या तुमको पता है कि मंदिर में पुरुष ही पुजारी क्यों होते है.. चप्पू- नहीं यार तुम ही बता दो.. गप्पू- मुझे पता है मैं बताता हूं.. ताकि, लोग सिर्फ भगवान पर ध्यान दे सकें..!

आज मैंने अपने दिल से पूछा प्यार क्या है?
दिल ने जवाब दिया –
देख, मेरा काम है खून सप्लाई करना... फालतू की बात मत किया कर..!

एक गधा पेड़ पर चढ़ा तो
ऊपर बैठे हाथी ने पूछा,
हाथी : तूं क्यूं चढ़ा ?
गधा : Apple खाने
हाथी : ये तो Mango Tree है।
गधा : मालूम है, मैं Apple साथ में लाया हूं..!

आज का विचार
रोजगार है
तो सोमवार है, वरना सातों दिन रविवार है.

क्लास खत्म होने पर
सर : कुछ पूछना हो तो अभी पूछ लो
पप्पू : सर आप कौन सा सब्जेक्ट पढ़ा रहे थे ?

एक बात पूछनी थी,
यह फेविक्विक सभी जगह चिपक जाती है..
पर जिस ट्यूब में होती है, उसमें
क्यों नहीं चिपकती ?

'फिर से सूखी रोटी और आलू की सब्जी। पिछले तीन महीने से यही खाना खा-खाकर ऊब चुका हूं। मैं नहीं खाऊंगा' -खाने की थाली को गुस्से में उलटते हुए पप्पू ने कहा।

'अरे बेटा! खाने का अपमान नहीं करते हैं। सुबह में अपने घर से खाना खाकर ही बाहर निकलना चाहिए। कल तुम्हारे पसंद का खाना बना दूंगी। अभी जो बना है, खा लो'- श्यामा, पप्पू की मां, ने दुःखी मन से समझाते हुए कहा।

दिल्ली के बुराड़ी इलाका का 'श्यामा निवास'। जनवरी महीने की कंपकंपाती ठंड। रविवार का दिन। सुबह आठ बजे हैं। लेकिन 'श्यामा निवास' का माहौल गर्म है। पप्पू नौवीं क्लास में पढ़ता है और चार भाई-बहनों में वह सबसे छोटा है। उसे तनिक भी भूख बर्दाश्त नहीं। भूख के मारे उसका क्रोध सातवें आसमान पर है।

जीवन दास, पप्पू के पिता, दिल्ली में बैटरी बनाने की प्राइवेट कंपनी में सुपरवाइजर के पद पर काम करते थे। घर के एकमात्र कमाऊ मेंबर हैं। किसी तरह गुजारा हो जा रहा था। किंतु कंपनी घाटे में चलने के कारण बंद हो गई। अब जीवन जी पिछले एक वर्ष से एक रेजिडेंशियल सोसायटी में गार्ड की नौकरी करते हैं। तब से घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है।

'मां, मैं चाचा जी के यहां जा रहा हूं। वहीं नाश्ता कर लूंगा' -पप्पू ने क्रोधित मुद्रा में साईकिल निकालते हुए कहा। दो किलोमीटर की दूरी पर रामनिवास दास जी का घर है। रिश्तेदारी में उसके चाचा लगते हैं। वे दिल्ली सरकार में बिजली विभाग में इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। वे पप्पू को बेटे जैसा मानते हैं। पप्पू को भी उनसे बड़ा लगाव है।

'बेटा, मेरी मानो तो उनके यहां मत जाओ। हमारी माली हालत किसी से छिपी नहीं है। **ग़रीबों का कोई रिश्तेदार नहीं होता है। उसे कोई नहीं पहचानता है**' - श्यामा जी ने समझाते हुए कहा। लेकिन पप्पू नहीं माना।

कुछ देर बाद।

'प्रणाम चाचा जी। प्रणाम चाची जी' -पप्पू ने आदर सहित कहा।

'आओ बेटा। बहुत दिनों के बाद आए। हमेशा सोचता हूं तुम्हारे घर जाऊं। पर समय ही नहीं

मिलता है। पापा-मम्मी का क्या हाल-चाल है? तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है? सुबह-सुबह आए हो। नाश्ता-पानी करके जाना' -रामनिवास जी ने कहा।

नाश्ते का नाम सुनते ही पप्पू के मन में पूड़ी-सब्जी की थाली घूमने लगी। अक्सर चाचा जी के यहां उसे यही खाने को मिलता था।

'संडे का दिन है न। सुबह लेट से उठना होता है। सारे काम में लेट हो ही जाता है। अभी तक हमारे यहां नाश्ते में कुछ नहीं पका है। आराम से होगा। लेकिन चलो, तुम्हें कुछ स्पेशल खिलाती हूं। रात की बची रोटी है। **नमक, सरसों के तेल और प्याज के साथ खाने में तुमको खूब मज़ा आएगा। हमलोगों ने कई बार खाया है' -वीणा, उसकी चाची ने थाली परोसते हुए कहा।**

'गरीबों के...रिश्तेदार.. नहीं..' मां की बातें पप्पू के जेहन में घूमने लगी। कच्ची उम्र में वह सांसारिक जीवन के एक कटु अनुभव से रू-ब-रू हो रहा था। वह आश्चर्यचकित मुद्रा में नाश्ते की थाली और अपने पिता-समान चाचा को देखे जा रहा था। उसे अपने घर की सूखी रोटी और आलू की सब्जी की याद आ गई।

- **मृत्युंजय कुमार मनोज जी, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)**

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

1~ अपनी मिट्टी की महक, अपनेपन का भाव। हिन्दी 'अंतर' में बसी, लेकर अमित लगाव।

2~ हिन्दी मन की लेखनी, कहे हृदय हालात। शुभवाणी शाश्वत सदा, सरल सहज सब बात।

3~ हुए उपासक ये सभी, भक्ति किए भरपूर। हिन्दी इनकी तूलिका, तुलसी, मीरा, सूर।

4~ वंदन निज भाषा अमित, समझ इसे सरताज। कोई कहता कुछ रहे, हिन्दी में हो काज।

5~ अंग्रेजी के मोह में, निज भाषा मत छोड़। पराधीन में सुख नहीं, राष्ट्रधर्म से जोड़।

6~ हिन्दी भाषा है सबल, सबमें भरे उमंग। यह भाषा ही राष्ट्र में, भरे एकता रंग।

7~ 'अमित' सुगम हिन्दी लगे, शब्द जाल नहिं क्लिष्ट। भाषा जनहित मधुरिमा, वाणी वाक्य विशिष्ट।

8~ हिन्दी भाषा भारती, फिर क्यों मन संकोच। हिन्दी में सद्भावना, फिर भी इतनी सोच।

9~ सरस भाव में शायरी, गीत गजल अरु छंद। हिन्दी भाषा भाव को, समझे हैं मतिमंद।

- **डॉ. कन्हैया साहू 'अमित' जी, भाटापारा (छत्तीसगढ़)**

हिंदी भाषा से जुड़े रोचक तथ्य -

फारसी शब्द 'हिन्द' से ही हिन्दी शब्द की उत्पत्ति हुई है जिसका अर्थ 'सिंधु नदी की भूमि' होता है। हिन्दी संस्कृत का अपभ्रंश है। संस्कृत को देवों की भाषा भी कहा जाता है। हिन्दी और संस्कृत दोनों को देवनागरी लिपि में ही लिखा जाता है। देवनागरी लिपि का मतलब होता है देवों के यहां लिखी जाने वाली लिपि।

ओणम, केरल का एक प्रमुख त्योहार है, जो हर साल अगस्त-सितंबर के बीच मनाया जाता है। यह त्योहार मुख्य रूप से **मलयाली समुदाय** द्वारा धूमधाम से मनाया जाता है और इसकी शुरुआत **चिंगम महीने** के पहले दिन से होती है। ओणम पर्व की विशेषता उसकी सांस्कृतिक विविधता, पारंपरिक रीति-रिवाज और स्थानीय मान्यताओं से जुड़ी होती है।

ओणम का त्योहार महाबली राजा के आगमन की खुशी में मनाया जाता है, जो एक प्राचीन लोककथा के अनुसार, अपनी प्रजा के बीच हर साल अपनी भव्य यात्रा पर आते हैं। राजा महाबली को उनके दयालु और न्यायप्रिय शासन के लिए याद किया जाता है। यह पर्व प्राकृतिक समृद्धि और सामाजिक मेल-मिलाप की प्रतीक है।

ओणम की तैयारियाँ - ओणम के दिन, घरों को सजाने की परंपरा होती है। **महिलाएं अपने घरों के आँगन में रंग-बिरंगे फूलों से 'पुकलम' (फूलों की रंगीन सजावट) बनाती हैं।** इस दिन, विशेष रूप से **'सद्या' और पूज़ी, अवियल, काप्पा, पायसम** आदि पारंपरिक भोजन तैयार किया जाता है। यह भोजन सर्प-आकृतियों की टोकरी में परोसा जाता है और इसे आमतौर पर केले के पत्तों पर सजाया जाता है।

ओणम के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इनमें **'ओणम सध्या'** (ओणम का भोजन), **'पुलिकली'** (सारसों की भाँति सजने वाले लोगों के नृत्य), और **'वामन और महाबली के चरित्र निभाने वाले लोक-नृत्य** शामिल हैं। विशेष रूप से **'वृंदा' (पारंपरिक रेस) और 'कुम्बलंगी' (कुम्बलंगी नृत्य)** जैसे खेल भी इस पर्व का हिस्सा होते हैं।

ओणम के दौरान, **पारंपरिक खेल** जैसे कि **'लॉन्ग-ड्रॉ', 'कथकली', और 'कुंबलंगी' का आयोजन होता है। 'पुंडी' खेल भी इस त्योहार का हिस्सा है।**

ओणम पर्व का समापन **'अट्ठा'** नामक विशेष पूजा से होता है, जिसमें भगवान महाबली की पूजा की जाती है और उनके स्वागत के लिए विशेष आयोजन किए जाते हैं।

यह पर्व समृद्धि, खुशी और सामाजिक एकता का प्रतीक है। इस पर्व को धूमधाम से मनाकर, लोग अपने जीवन में खुशी और समृद्धि की कामना करते हैं।

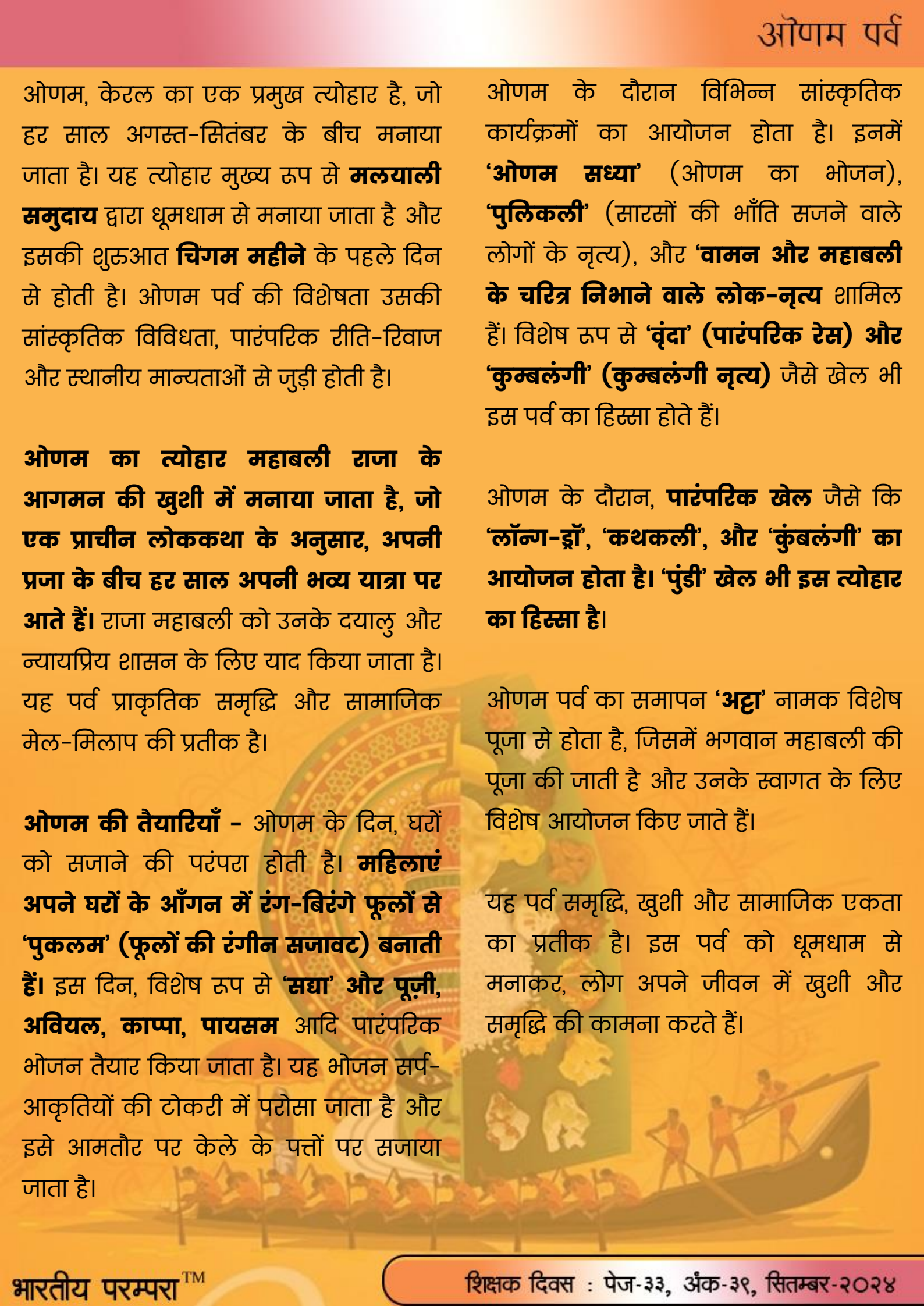

एक आलस्य वह होता है, जिसमें शरीर आराम ढूंढ़ता है और कोई भी शारीरिक क्रिया करने से शरीर इन्कार कर देता है...और, एक आलस्य दिमाग से होता है, जो सुस्त और ऊबा हुआ महसूस कराता है।

हमारे दिमाग ने अगर एक बार सोच लिया कि **"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि क्या करना है?"** तो यह सोच दिमाग का आलस्य है... यानी, यदि हमें किसी ने कोई नया काम सौंपा या हमें ऐसे काम की ज़िम्मेदारी मिली है जो हमने कभी नहीं किया है, तो दिमाग ख़ुद को कष्ट देने से रोकता है।

इससे दिमाग को तो आराम मिलता है, लेकिन वह हमें आगे बढ़ने से रोकता भी है। लेकिन, अगर कोई नया काम हम करते भी हैं, तो ज़्यादा से ज़्यादा क्या होगा? हमसे गलती होगी, लेकिन गलतियों से हमें कुछ सीखने को मिलता है और जीवन में नए रास्ते भी खुलते हैं। इसलिए, **हमें काम को सीखने के उद्देश्य से करना चाहिए, उसे बोझ समझ कर नहीं करें।**

कभी-कभी हमारे दिमाग को डर जकड़ लेता है, कि **"यह हमसे नहीं हो पाएगा"**, **तब हम किसी भी चीज़ को हासिल करने के बजाए, वहीं थम जाते हैं....** इसके लिए पहले हम इस डर से बाहर निकलें एवं अपनी कमी को स्वीकार करें और वह काम करने की कोशिश करें, जिससे हम डर रहे थे।

किसी भी काम को करने से पहले यह सोचना कि "यह तो हमसे नहीं हो पाएगा" एक तरह की कायरता ही है। **निश्चित मानसिकता भी हमें आलसी बनाती है,** कभी-कभी कुछ करने से पहले ख़याल आता है कि अब सीखने की उम्र नहीं रही, लोग हंसेंगे, यही सोच कर हम आगे नहीं बढ़ पाते।

एक कहावत है कि पेड़ लगाने का एक सही वक्त 20 साल पहले था और दूसरा सही वक्त अभी है। अर्थात, **कुछ सीखने की या कोई काम शुरू करने की कोई निश्चित उम्र नहीं होती,** इसलिए हमें दूसरों के लिए नहीं वरन अपने लिए कुछ नया करना है, हमें ऐसा सोच कर काम करना चाहिए।

शरीर के साथ हमारा दिमाग भी एक बिन्दु

पर आकर रुक जाता है, लेकिन सहन-शक्ति को बढ़ाने और ऊर्जा को एकत्रित करने के तरीके ढूंढे जा सकते हैं। हम जब भी आलस्य या थकान महसूस करें, तो थमने के बजाए अपनी ऊर्जा वापस लाने का प्रयास करें... पोषण, शारीरिक व्यायाम और ताज़ी हवा से हम ख़ुद को पुनः ऊर्जावान बनाने की कोशिश करें, और आलस्य, थकान व डर को खुद पर हावी नहीं होने दें।

हे परमात्मा!!....
सबका जीवन शांति और सुख से बीते, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

धन्यवाद!!

- **मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)**

विज्ञापन करें

यदि आप भारतीय परम्परा की पत्रिका और वेबसाइट पर विज्ञापन देना चाहते हैं, तो हमसे संपर्क करें।

पत्रिका में आधा पेज और पूरा पेज विज्ञापन उपलब्ध है। वेबसाइट पर 2 प्रकार के बैनर उपलब्ध हैं, जिन्हें 3 स्थानों पर देखा जा सकता है।

अन्नंत चतुर्दशी

अन्नंत चतुर्दशी भाद्रपद माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है, जो विशेष रूप से अन्नंत देवता की पूजा का दिन है। इस दिन भक्त अन्नंत की प्रतिमा की पूजा करते हैं और अन्नंत चालीसा का पाठ करते हैं। पूजा के दौरान विशेष रूप से अन्नंत की भव्य पूजा अर्चना की जाती है, जिससे जीवन में समृद्धि और खुशहाली की प्राप्ति होती है। इस दिन व्रत रखने से पापों की शांति और पुण्य की प्राप्ति होती है। अन्नंत चतुर्दशी का व्रत धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है, जो भक्तों को आध्यात्मिक सुख और आशीर्वाद प्रदान करता है।

गणपति विसर्जन

गणपति विसर्जन गणेश चतुर्थी के समापन का महत्वपूर्ण अवसर है, जब भक्त गणेश जी की मूर्तियों को विसर्जन के लिए जल में प्रवाहित करते हैं। यह दिन गणेश जी की विदाई का दिन होता है, जिसमें भव्य जुलूस और धूमधाम से पूजा के बाद मूर्तियों को नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित किया जाता है। विसर्जन के दौरान भक्त गणेश जी की पूजा करके उनके आगमन की खुशी मनाते हैं और उनके सुखमय पुनरागमन की प्रार्थना करते हैं। इस दिन को उत्सव के समापन के रूप में मनाया जाता है, जिसमें श्रद्धा और भक्ति के साथ गणेश जी को विदाई दी जाती है। गणपति विसर्जन एक सांस्कृतिक परंपरा है, जो समृद्धि और खुशहाली की कामना को दर्शाती है।

धर्म ग्रंथों के अनुसार, विधिपूर्वक श्राद्ध करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है। **मान्यता है कि पितृपक्ष के 16 दिनों के दौरान सभी पूर्वज अपने परिवार के सदस्यों को आशीर्वाद देने के लिए पृथ्वी पर आते हैं।** इस समय उनके लिए तर्पण, श्राद्ध और पिंडदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे पूर्वजों को उनके इष्ट लोकों में जाने में मदद मिलती है। जिन लोगों द्वारा पिंडदान नहीं किया जाता, वे पितृ ऋण और पितृदोष के शिकार हो सकते हैं। इसलिए, पितृपक्ष के दौरान श्राद्ध करते समय निम्न बातें ध्यान में रखें:

• श्राद्ध अनुष्ठान में परिवार का सबसे बड़ा सदस्य, विशेष रूप से परिवार का सबसे बड़ा बेटा, विधिपूर्वक श्राद्ध करवाएं।

• पितरों का श्राद्ध करने से पूर्व स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र पहनें।

• कुश / घास से बनी अंगूठी पहनें, जो दया का प्रतीक है और पूर्वजों के आह्वान के लिए उपयोग की जाती है।

• पिंडदान के दौरान जौ के आटे, तिल और चावल से बने गोलाकार पिंड अर्पित करें।

• श्राद्ध के भोजन को कौवे को अर्पित करें, जिन्हें यम का दूत माना जाता है।

• ब्राह्मणों को भोजन अर्पित करें और गंगा अवतराम, नचिकेता, अग्नि पुराण और गरुड़ पुराण की कथाओं का पाठ करें।

• पितृ पक्ष के दिन संकल्प लें और इस मंत्र का जाप करें: "ये बान्धवा बान्धवा वा ये नजन्मनी बान्धवा, ते तृप्तिमखिला यन्तुं यश्छमतत्तो अलवक्ष्छति।"

• जहां आप पानी रखते हैं, वहां रोज शाम को शुद्ध घी का दीपक लगाएं। इससे पितरों की कृपा बनी रहती है। ध्यान दें कि वहां जूठे बर्तन न रखें।

• सर्व पितृ अमावस्या के दिन चावल के आटे के 5 पिंड बनाकर लाल कपड़े में लपेटकर नदी में बहा दें।

• गाय के गोबर से बने कंडे को जलाकर उसमें गूगल, घी, जौ और तिल मिलाकर घर में धूप करें।

• विष्णु भगवान के किसी मंदिर में सफेद तिल और कुछ दक्षिणा (रुपए) दान करें।

• कच्चे दूध, जौ, तिल और चावल को मिलाकर नदी में बहा दें। यह उपाय सूर्योदय के समय करना लाभकारी होगा।

• श्राद्ध के दौरान ब्राह्मण को भोजन कराएं या सामग्री जैसे आटा, फल, गुड़, सब्जी और

दक्षिणा दान करें।

• यदि आप श्राद्ध नहीं कर सकते, तो किसी नदी में काले तिल डालकर तर्पण करें, इससे पितृ दोष में कमी आती है।

• श्राद्ध पक्ष में किसी विद्वान ब्राह्मण को एक मुट्ठी काले तिल दान करें, इससे पितृ प्रसन्न होते हैं।

• पितरों को याद कर गाय को हरा चारा खिलाएं, जिससे वे प्रसन्न और तृप्त होते हैं।

• सूर्यदेव को अरख देकर प्रार्थना करें कि वे आपके पितरों को श्राद्धयुक्त प्रणाम पहुँचाएं और उन्हें तृप्त करें।

श्राद्धपक्ष के दौरान कभी न करें ये काम –

• शास्त्रों के अनुसार, पितृपक्ष के दिनों में किसी भी प्रकार के शुभ कार्य का आयोजन नहीं करना चाहिए।

• इस अवधि में वाहन या नया सामान न खरीदें।

• माँसाहारी भोजन का सेवन पूरी तरह से वर्जित है। अगर आप श्राद्ध कर्म के दौरान जनेऊ पहनते हैं, तो पिंडदान के समय इसे बाएं की बजाय दाएं कंधे पर रखें।

• श्राद्ध कर्मकांड करने वाले व्यक्ति को नाखून नहीं काटने चाहिए और दाढ़ी या बाल भी नहीं कटवाने चाहिए।

• तंबाकू, धूम्रपान, सिगरेट या शराब का सेवन न करें। यदि संभव हो, तो इस पखवाड़े के सभी 16 दिनों तक चप्पल न पहनें।

• मान्यता है कि पितृपक्ष के दौरान पितृ आपके घर में किसी न किसी रूप में आते हैं। इस समय किसी भी व्यक्ति या पशु का अपमान न करें। बल्कि, दरवाजे पर आने वाले किसी भी प्राणी को भोजन कराएं और सम्मान दें।

• श्राद्ध कर्म के दौरान ब्रह्मचर्य का सख्ती से पालन करें।

• पितृपक्ष में कुछ खाद्य पदार्थों का सेवन वर्जित है, जैसे चना, दाल, जीरा, काला नमक, लौकी, खीरा, सरसों का साग आदि।

• अनुष्ठान के लिए लोहे के बर्तन का उपयोग न करें; इसके बजाय सोने, चांदी, तांबे या पीतल के बर्तन का प्रयोग करें।

• अगर संभव हो तो गया, प्रयाग, बद्रीनाथ जैसे पवित्र स्थलों पर श्राद्ध कर्म करें, क्योंकि इन्हें विशेष फल देने वाले माना जाता है। यदि ये स्थान उपलब्ध नहीं हैं, तो अपने घर के आंगन या किसी पवित्र स्थान पर तर्पण और पिंडदान कर सकते हैं।

• श्राद्ध कर्म के लिए काले तिल का उपयोग करें और सफेद तिल का भी इस्तेमाल न भूलें। पिंडदान करते समय तुलसी के पत्ते जरूर रखें।

• श्राद्ध कर्म को शाम, रात, सुबह या अंधेरे में नहीं करना चाहिए।

• पितृपक्ष में गायों, ब्राह्मणों, कुत्तों, चींटियों, बिल्लियों और ब्राह्मणों को यथासंभव भोजन कराएं।

भारतीय परंपरा की मासिक पत्रिका की एक प्रति **श्री अनूप जलोटा (पदम् श्री भजन सम्राट)** को भेंट करते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है। पत्रिका के लिए अपने अपना कीमती समय निकालकर अपने विचार और समर्थन प्रदान किया, इसके लिए हम आपका दिल से आभार प्रकट करते हैं।

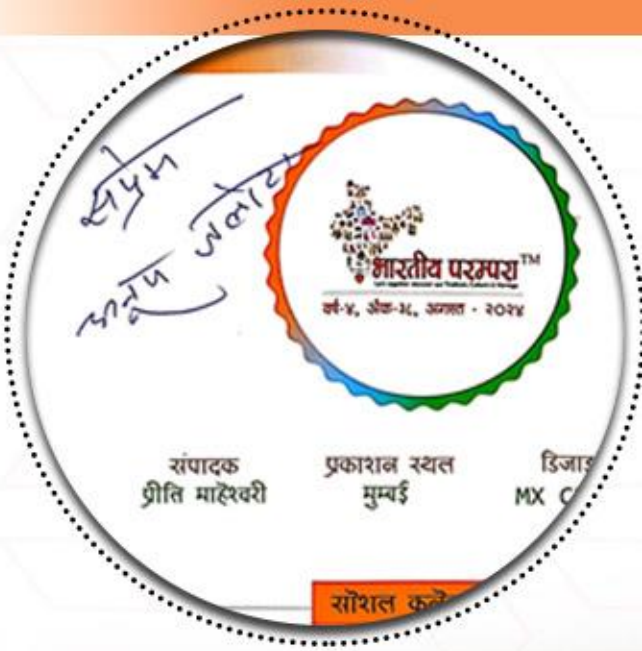

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solution at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

भारतीय परम्परा
गणेश जी की कृपा से चमक उठे जीवन की राह,
सभी के विघ्नों को मिटाकर जीवन दे संवार।
उनके आशीर्वाद से पूरी हो हर एक मनोकामना,
सर्वशक्तिमान बप्पा की सदा हो जय-जयकार।
www.bhartiyaparampara.com